

प्रशासनिक नीतिशास्त्र

— ADMINISTRATIVE ETHICS —

संस्करण 3.0 | समृद्ध एवं सचित्र संस्करण

RAS MAINS EXAM

PAPER - 2

प्रशासनिक नैतिकता

— ADMINISTRATIVE ETHICS —

UNIT - 01

CHAPTER नाम

- 1 नैतिकता एवं मानवीय मूल्य (Ethics and Human Values)
- 2 भारतीय नैतिक अवधारणाएँ: ऋत, ऋण, कर्मवाद, कर्तव्य, शुभ एवं सद्गुण
- 3 निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता, सत्यनिष्ठा एवं निष्ठाक्षता
- 4 भगवद्गीता का नैतिक दर्शन एवं प्रशासन में भूमिका
- 5 गांधीवादी नैतिकता (Gandhian Ethics)
- 6 भारतीय एवं विश्व के नैतिक चिंतक एवं दार्शनिक
- 7 प्रशासन में नैतिक चिंताएँ, द्वंद्व एवं चुनौतियों
- 8 नैतिक निर्णय-निर्माण, सामाजिक न्याय एवं सुशासन
- 9 केस स्टडी (Case Studies)



10

अध्याय

223

चित्र व फ्लोचार्ट

55

सच्ची व काल्पनिक कहानियाँ

80+

आसान परिभाषाएँ

20

हल की गई केस स्टडीज़

कहानी: "जनता के अधिकारी" — एस. आर. शंकरन (एक सच्ची घटना)

आंध्र प्रदेश संघर्ष के भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी एस. आर. शंकरन (1934–2010) को लोग प्यार से "जनता का अधिकारी" कहते थे। उनका सादा जीवन, ईमानदारी और काम के प्रति समर्पण ही उनकी पहचान था — निजी संपत्ति जोड़ने की उन्हें कभी चाह नहीं रही।

उन्होंने अपने पूरे सेवाकाल में समाज के सबसे कमजोर लोगों — दलितों, आदिवासियों और बंधुआ मजदूरों — को केंद्र में रखा। बंधुआ मजदूरी (क्रूर के बदले किसी व्यक्ति से जबरन, लगभग बिना मजदूरी के काम करवाने की प्रथा) समाप्त करने वाले कानून — बंधुआ मजदूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 — का ज़मीनी क्रियान्वयन, अनुसूचित जातियों-जनजातियों का कल्याण और भूमि-सुधार उनके काम के मुख्य क्षेत्र रहे। फ़ाइनल पर निर्णय लेते समय उनका प्रश्न सीधा होता था — "इससे सबसे गरीब आदमी को क्या मिलेगा?" उनकी निष्पक्षता पर इतना भरोसा था कि सेवानिवृत्ति के बाद भी कठिन सामाजिक विवादों में उन्हें मध्यस्थ बनाया जाता था।

उनके जीवन में इस पूरी पुस्तक के मूल्य एक साथ दिखते हैं — सत्यनिष्ठा, कर्तव्य, गांधी जैसी सादगी, सामाजिक न्याय और कठिन परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय। उनकी ईमानदारी सत्यनिष्ठा का, कमजोर वर्गों के लिए लगातार काम करना कर्तव्य और सामाजिक न्याय का, निजी संपत्ति न जोड़ना गांधी जैसी सादगी का, और विवादों में निष्पक्ष मध्यस्थता विवेकपूर्ण निर्णय का उदाहरण थी। इससे स्पष्ट है कि प्रशासनिक नीतिशास्त्र कोई किताबी विषय नहीं — यह अधिकारी के रोज़ के निर्णयों में जीने वाली चीज़ है।

इस कहानी से सीख: प्रशासनिक नीतिशास्त्र का सार है — शक्ति को सेवा में बदलना (यानी पद से मिले अधिकारों का प्रयोग अपनी सुविधा या रोब के लिए नहीं, बल्कि जनता की भलाई के लिए करना), और हर निर्णय में सबसे कमजोर व्यक्ति को केंद्र में रखना।

1. विषय-परिचय — प्रशासनिक नीतिशास्त्र क्या और क्यों?**आसान परिभाषा: प्रशासनिक नैतिकता (Administrative Ethics)**

परिभाषा: वह अध्ययन-क्षेत्र जो यह परखता व सिखाता है कि एक लोक सेवक को अपने अधिकार, विवेकाधिकार (नियमों की सीमा में अपनी समझ से निर्णय लेने की छूट — Discretion) व शक्ति का प्रयोग करते समय किन नैतिक मूल्यों — सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, जवाबदेही, करुणा, पारदर्शिता — से निर्देशित होना चाहिए, विशेषकर तब जब कानून व नियम किसी स्थिति में मौन हों या स्वयं दुविधा में डाल दें।

आसान भाषा में: जैसे एक डॉक्टर के पास चिकित्सा-ज्ञान (Knowledge) होने के बावजूद 'हिप्पोक्रेटिक शपथ' (रोगी को हानि न पहुँचाने का नैतिक संकल्प) उसे यह तय करने में मदद करती है कि मरीज़ के हित में सही निर्णय क्या है — ठीक उसी तरह एक प्रशासक के पास कानूनी ज्ञान होने के बावजूद नैतिकता ही उसे यह तय करने में मदद करती है कि किसी जटिल स्थिति में 'सही' निर्णय क्या है। **उदाहरण:** जब कोई ज़िला कलेक्टर किसी आपदा में नियम-प्रक्रिया के पूरा होने का इंतज़ार किए बिना तुरंत राहत पहुँचाने का विवेकाधिकार-आधारित निर्णय लेता है — वह प्रशासनिक नैतिकता का ही प्रयोग कर रहा होता है, क्योंकि उस समय लोगों की जान बचाना कागज़ी प्रक्रिया की औपचारिकता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

नीतिशास्त्र (Ethics) दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जो मानव आचरण के सही-ग़लत और उचित-अनुचित का व्यवस्थित अध्ययन करती है; "एथिक्स" शब्द यूनानी शब्द "एथोस" (चरित्र, स्वभाव) से बना है। कानून न्यूनतम आचरण तय करता है, जबकि नैतिकता सर्वोत्तम आचरण की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए, कानून केवल इतना कहता है कि अधिकारी रिश्तत न ले, पर नैतिकता यह भी कहती है कि वह हर फ़रियादी से विनम्रता से मिले और उसका काम बिना टाले समय पर करे। एक लोक सेवक को प्रतिदिन ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जहाँ नियम स्पष्ट निर्देश नहीं देते — वहाँ नैतिक समझ ही सही राह दिखाती है, और यही समझ भावी सेवाकाल की वास्तविक दुविधाओं से निपटने का मानसिक ढाँचा (Framework) तैयार करती है।

“ जैसे जीभ पर रखे शहद या विष का स्वाद न लेना असंभव है, वैसे ही सरकारी धन का काम करने वाले के लिए उसमें से थोड़ा भी न चखना कठिन है; और जैसे पानी में तैरती मछली कब पानी पीती है, यह जानना कठिन है, वैसे ही सरकारी कर्मचारी कब धन का दुरुपयोग करता है, यह जानना कठिन है। ” — कौटिल्य (चाणक्य; चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु व मंत्री) — अर्थशास्त्र

कहानी: पुस्तक की यात्रा — "नौ द्वार: नई उपखंड अधिकारी कविता का पहला वर्ष"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। इसका हर पड़ाव पुस्तक के एक अध्याय से जुड़ा है।)

कार्यभार सँभालते ही कविता को पिता का पत्र मिला — "कुर्सी बदलेगी, पर मूल्य मत बदलना" (अध्याय 1)। नहर के पानी पर दो गाँवों के झगड़े में उन्होंने समाज की व्यवस्था (ऋत — वह शाश्वत नियम-व्यवस्था जो प्रकृति और समाज को संतुलन में रखती है और सब पर समान रूप से लागू होती है) और नागरिक के ऋण (यह भाव कि हर व्यक्ति पर समाज, पूर्वजों और प्रकृति का ऋण है, जिसे अपने कर्तव्य निभाकर चुकाना होता है) को समझा (अध्याय 2)। एक रिश्तेदार की फ़ाइल आई, तो उन्होंने खुद को उस मामले से अलग कर लिया, क्योंकि अपने ही रिश्तेदार के मामले में निर्णय लेने से हितों का टकराव (Conflict of Interest) होता और उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठता (अध्याय 3)।

बाढ़ की रात उन्होंने बिना फल की चिंता किए काम किया — यानी प्रशंसा या पुरस्कार की परवाह छोड़कर केवल कर्तव्य समझकर, जिसे गीता में निष्काम कर्म कहा गया है (अध्याय 4 — गीता) और राहत बँटते समय सबसे पहले सबसे दूर की झोपड़ी तक पहुँचीं, क्योंकि गांधी जी का जंतर (ताबीज़ जैसा सूत्र) सिखाता है कि कोई भी निर्णय लेते समय सबसे गरीब और कमज़ोर व्यक्ति का चेहरा याद करो और सोचो कि इससे उसे क्या लाभ होगा (अध्याय 5 — गांधी का जंतर)। एक नीति पर उन्होंने बेन्थम (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख), कांट (कर्तव्य और सब पर समान लागू होने वाला नियम) और अरस्तू (सद्गुण और संतुलित 'मध्यम मार्ग') की कसौटियाँ लगाई (अध्याय 6)। एक AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) प्रणाली ने एक ज़रूरतमंद का नाम लाभार्थी-सूची से काट दिया, तो उन्होंने मशीन के निर्णय को आँख मूँदकर मानने के बजाय अपनी अंतरात्मा की सुनी और मामले की स्वयं जाँच की (अध्याय 7); और उद्योग को छूट के प्रस्ताव पर सामाजिक न्याय तथा जवाबदेही की कसौटी लगाई — यानी यह परखा कि इस छूट का लाभ और बोझ समाज के किन वर्गों पर पड़ेगा और इस निर्णय का हिसाब जनता को कैसे दिया जाएगा (अध्याय 8)।

वर्ष के अंत में अकादमी में उन्होंने अपनी हर कठिन परिस्थिति एक केस स्टडी की तरह सुनाई — दुविधा, हितधारक, विकल्प, निर्णय और औचित्य — यानी पहले समस्या में छिपी दुविधा पहचानी, फिर उससे प्रभावित लोगों (हितधारकों) को गिना, सभी संभव विकल्प तौले, एक निर्णय चुना और अंत में बताया कि वह निर्णय सही क्यों था (अध्याय 9)।

 **इस कहानी से सीख:** यह पुस्तक मूल्यों की नाँव से शुरू होकर भारतीय और विश्व-दर्शन, प्रशासन की दुविधाओं, निर्णय के आधार और केस स्टडी के व्यावहारिक प्रयोग तक एक क्रमबद्ध यात्रा है।

2. आधिकारिक पाठ्यक्रम — इकाई-I : प्रशासनिक नीतिशास्त्र

पाठ्यक्रम में कुल नौ बिंदु हैं — आठ विषय-बिंदु और नौवाँ बिंदु इन्हीं विषयों पर आधारित गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़ (ऐसी काल्पनिक प्रशासनिक परिस्थितियाँ जिनमें तथ्य याद करके नहीं, बल्कि नैतिक समझ से निर्णय लेकर उसका कारण बताना होता है)। इस पुस्तक में हर बिंदु के लिए एक अलग अध्याय है, यानी बिंदु और अध्याय का सीधा एक-एक मिलान है।

क्र.	पाठ्यक्रम-बिंदु (हिंदी अर्थ, मूल शब्द कोष्ठक में)	पुस्तक में
1	नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य: महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन और शिक्षाओं से सीख। मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका। (Ethics and human Values: Lessons from lives and teachings of great leaders, reformers and administrators. Role of family, society and educational institutions in inculcating values.)	अध्याय 1
2	नैतिक अवधारणाएँ — ऋत और ऋण; कर्मवाद से प्रेरणा। कर्तव्य की अवधारणा, शुभ (अच्छाई) और सद्गुण की अवधारणा। (Ethical concepts Rit and Rin — Inspiration from Karmavada. Concept of Duty, concept of Good and Virtue.)	अध्याय 2
3	निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र। सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात का दार्शनिक आधार। उदारवादी समाज: पारदर्शिता, मीडिया और नौकरशाही। (Ethics in private and public relationships. Philosophical basis of Integrity, impartiality and non-partisanship. Liberal Society: Transparency, media and bureaucracy.)	अध्याय 3
4	भगवद्गीता का नीतिशास्त्र और प्रशासन में इसकी भूमिका। (Ethics of Bhagwad Geeta and its role in administration.)	अध्याय 4
5	गांधीवादी नीतिशास्त्र। (Gandhian Ethics.)	अध्याय 5
6	भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान। (Contribution of Moral thinkers, and Philosophers from India and World.)	अध्याय 6
7	प्रशासन में नैतिक चिंताएँ, दुविधाएँ और चुनौतियाँ। प्रशासनिक निर्णय-निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) बनाम अंतरात्मा। (Ethical concerns, dilemmas and challenges in administration. Artificial Intelligence (AI) Versus Conscience in administrative decision making.)	अध्याय 7
8	नैतिक निर्णय-निर्माण का आधार: सामाजिक न्याय, मानवीय चिंताएँ, शासन में जवाबदेही। साधनभूत तार्किकता बनाम	अध्याय 8

क्र.	पाठ्यक्रम-बिंदु (हिंदी अर्थ, मूल शब्द कोष्ठक में)	पुस्तक में
	मूल्य तार्किकता। (Basis of Ethical decision making: Social justice, humanitarian concerns, accountability in governance. Instrumental rationality versus value rationality.)	
9	उपर्युक्त विषयों पर आधारित गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़। (Non-factual Case Studies on the above mentioned topics.)	अध्याय 9

3. पूरी पुस्तक की विषय-सूची

पूरी पुस्तक — एक नज़र में



चित्र 0.1: पूरी पुस्तक — एक नज़र में

अध्याय	शीर्षक	मुख्य विषय	पृष्ठ
00	विषय-परिचय, पाठ्यक्रम एवं विषय-सूची	नीतिशास्त्र का परिचय, आधिकारिक पाठ्यक्रम	2
01	नैतिकता और मानवीय मूल्य	मानवीय मूल्य, महान व्यक्तित्वों से सीख, परिवार-समाज-शिक्षा की भूमिका	5
02	नैतिक अवधारणाएँ — ऋत, ऋण एवं कर्मवाद	ऋत, ऋण, कर्मवाद, कर्तव्य, शुभ और सद्गुण	50
03	निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र	सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, गैर-पक्षपात, पारदर्शिता, मीडिया	75
04	भगवद्गीता की नैतिकता और प्रशासन में भूमिका	निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ, लोकसंग्रह, स्वधर्म	99
05	गांधीवादी नीतिशास्त्र	सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ट्रस्टीशिप, सर्वोदय	126
06	नैतिक विचारक और दार्शनिक	भारत और विश्व के विचारक — सुकरात से आंबेडकर तक	152
07	प्रशासन में नैतिक चिंताएँ, दुविधाएँ और चुनौतियाँ	चिंताएँ, दुविधाएँ, हितों का टकराव, AI बनाम अंतरात्मा	190
08	नैतिक निर्णय-निर्माण का आधार	सामाजिक न्याय, मानवीय चिंताएँ, जवाबदेही, साधनभूत बनाम मूल्य तार्किकता	216
09	गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़	केस स्टडी का ढाँचा, 20 हल की गई परिस्थितियाँ	236

कहानी: सच्ची कहानी — ₹5,000 का कर्ज़ और एक प्रधानमंत्री की ईमानदारी

बात 1964-65 की है। लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे। एक दिन घर में बच्चों ने कहा — "बाबूजी, अब तो हमारे पास भी एक अपनी कार होनी चाहिए। सरकारी गाड़ी तो सरकारी काम के लिए है, घर के काम के लिए नहीं।" शास्त्रीजी मुस्कुराए। उन्हें यह बात अच्छी लगी कि बच्चे सरकारी गाड़ी को निजी काम में लेना ठीक नहीं मानते।

उन्होंने अपनी बचत देखी — बैंक खाते में कुल ₹7,000 थे, जबकि उस समय एक नई फ़िएट (Fiat) कार ₹12,000 की आती थी। देश का प्रधानमंत्री चाहता तो एक इशारे पर सब कुछ हो सकता था, पर शास्त्रीजी ने वही रास्ता चुना जो एक आम नागरिक चुनता है। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक में ₹5,000 के ऋण का आवेदन दिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई भी ग्राहक देता है, और बाकी पैसे अपनी बचत से मिलाकर कार खरीदी। उन्होंने परिवार से कहा — "यह ऋण हम पाई-पाई चुकाएँगे।"

जनवरी 1966 में ताश्कंद में भारत-पाकिस्तान समझौते के बाद शास्त्रीजी का अचानक देहांत हो गया। ऋण अभी बाकी था। ऐसे में उनकी पत्नी ललिता शास्त्री ने वह किया जो इस परिवार के संस्कारों के अनुरूप था — उन्होंने किसी रियायत की माँग नहीं की, बल्कि अपनी पेंशन से धीरे-धीरे पूरा ऋण चुका दिया।

यही शास्त्रीजी थे जिन्होंने 1965 के अन्न-संकट में देशवासियों से सप्ताह में एक समय का भोजन छोड़ने की अपील की थी — पर अपील करने से पहले उन्होंने अपने ही परिवार के साथ एक समय भोजन छोड़कर देखा था कि बच्चे भूख सह पाएँगे या नहीं। वे पहले स्वयं करते थे, फिर दूसरों से कहते थे। आज वह फ़िएट कार नई दिल्ली के लाल बहादुर शास्त्री स्मारक में रखी है — एक ऐसी कार, जो याद दिलाती है कि सबसे बड़ा पद भी सबसे सादे मूल्यों से ही महान बनता है।

इस कहानी से सीख: सत्यनिष्ठा का अर्थ है — जब कोई देख न रहा हो और आपके पास शॉर्टकट की पूरी ताकत हो, तब भी सही रास्ता चुनना। शास्त्रीजी ने सार्वजनिक संसाधन (सरकारी गाड़ी) और निजी ज़रूरत (परिवार की कार) को अलग रखा, उदाहरण से नेतृत्व किया, और यह मूल्य उनके परिवार में इतनी गहराई तक उतरा कि उनकी पत्नी ने भी वही रास्ता निभाया। यही इस अध्याय का केंद्रीय संदेश है — मूल्य परिवार से बनते हैं, आचरण से दिखते हैं और नेतृत्व से समाज में फैलते हैं।

अध्याय 01 — एक नज़र में



चित्र 1.1: अध्याय 01 — एक नज़र में

कहानी: अध्याय की यात्रा — "दादाजी की चौपाल: एक दिन, सोलह सबक"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। इसकी हर घटना आपको इस अध्याय के किसी न किसी खंड की झलक देगी — इसे ध्यान से पढ़िए, पूरा अध्याय आपकी आँखों के सामने घूम जाएगा।)

सीकर ज़िले के एक छोटे-से गाँव में सुबह की धूप अभी आँगन में उतरी ही थी कि मेधा ढोल-नगाड़ों के बीच घर पहुँची। राजस्थान प्रशासनिक सेवा में उसका चयन हुआ था और अगले हफ्ते से उसका प्रशिक्षण शुरू होना था। सबसे पहले वह अपने दादाजी हरिराम जी के पैर छूने पहुँची, जो गाँव के सरकारी विद्यालय से प्रधानाध्यापक होकर सेवानिवृत्त हुए थे। दादाजी ने आशीर्वाद दिया और बोले — "बधाई हो बेटिया! पर अफ़सर बनने से पहले आज पूरा दिन मेरे साथ गाँव में घूमना। किताबें तुमने बहुत पढ़ लीं, आज ज़िंदगी की किताब पढ़ेंगे।"

पहला पड़ाव — चौपाल की बहस: चौपाल पर दो बुजुर्ग बहस कर रहे थे — एक कह रहा था "हमारे ज़माने में बेटियों को बाहर पढ़ने भेजना ठीक नहीं माना जाता था", दूसरा कह रहा था "समय बदल गया है, बेटी अफ़सर बनी है।" दादाजी ने मेधा से पूछा — "बताओ, सही-गलत तय कौन करता है? गाँव की रीत, क़ानून, या हमारी अंतरात्मा?" यहीं से मेधा ने समझा कि नीतिशास्त्र क्या है, यह नैतिकता से कैसे अलग है, इसके आयाम कौन-से हैं, और किसी कार्य को परखने के निर्धारक — उद्देश्य, साधन, परिस्थिति और परिणाम — क्या होते हैं। (खंड 1 से 4)

दूसरा पड़ाव — बस अड्डे का पर्स: बस अड्डे पर एक लड़का किसी यात्री का गिरा हुआ पर्स लौटाने दौड़ा। लोग बोले — "क़ानून तो कहता ही है कि दूसरे का माल लौटाओ।" दादाजी ने कहा — "क़ानून तो केवल न्यूनतम बताता है। उस लड़के को किसी पुलिस ने नहीं देखा था — फिर भी उसने लौटाया, क्योंकि उसके भीतर का नियम क़ानून से ऊँचा है।" मेधा को क़ानून और नीतिशास्त्र का अंतर और यह बात समझ आई कि नैतिक आचरण का परिणाम व्यक्ति, संगठन और पूरे समाज के भरोसे पर पड़ता है। (खंड 5 और 6)

तीसरा पड़ाव — दादी की पोटली: घर लौटते तो दादी ने पड़ोस की एक बीमार विधवा के लिए खिचड़ी की पोटली बाँध रखी थी। "हम अमीर नहीं, पर भूखे को खिलाना हमारा धर्म है," दादी ने कहा। दादाजी बोले — "देखो, यह है मूल्य — जिस बात को हम दिल से ज़रूरी मानते हैं। विश्वास में जब भावना मिल जाती है, तो वह मूल्य बनता है, और मूल्य ही हमारे व्यवहार में उतरता है।" उस दिन मेधा ने करुणा, सहानुभूति, सहिष्णुता, अनुशासन, कृतज्ञता जैसे मूल्यों को किताब से निकलकर जीते हुए देखा। (खंड 7 और 8)

चौथा पड़ाव — पंचायत भवन की शिकायत: दोपहर में पंचायत भवन पर एक युवक आया और बोला — "मेधा दीदी, अब तो आप अफ़सर हो। हमारे खेत की नाप वाला मामला अपने हिसाब से करवा देना।" मेधा कुछ बोलती, उससे पहले दादाजी ने कहा — "बेटा, अफ़सर किसी गाँव, जाति या दल का नहीं होता। जिस दिन फ़ाइल पर अपना-पराया दिखने लगा, उस दिन कुर्सी की इज़ज़त चली जाती है।" मेधा को सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात का असली अर्थ समझ आ गया — न्याय होना ही नहीं, होते हुए दिखना भी चाहिए। (खंड 9 और 10)

पाँचवाँ पड़ाव — विद्यालय की दीवार: शाम को दादाजी उसे अपने पुराने विद्यालय ले गए। दीवारों पर गांधीजी, डॉ. अंबेडकर, सरदार पटेल, स्वामी विवेकानंद और कई आदर्श प्रशासकों के चित्र थे। दादाजी ने हर चित्र के नीचे लिखी एक पंक्ति पढ़कर सुनाई और बोले — "इनके भाषण नहीं, इनका जीवन पढ़ना। नेता दिशा देता है, सुधारक कुरीतियाँ तोड़ता है और प्रशासक योजनाओं को ज़मीन पर उतारता है।" (खंड 11)

छठा पड़ाव — कक्षा का पुराना रजिस्टर: एक अलमारी से दादाजी ने पुराना रजिस्टर निकाला, जिसमें मेधा के बचपन की एक घटना दर्ज थी — उसने परीक्षा में नकल की पर्ची मिलने पर खुद शिक्षक को सौंप दी थी। "तब तुम सज़ा के डर से नहीं, सही होने के कारण ऐसा कर पाई थी," दादाजी मुस्कुराए। "मनुष्य पहले डर से अच्छा बनता है, फिर तारीफ़ के लिए, फिर नियम के लिए — और सबसे ऊँची सीढ़ी पर इसलिए कि वह सही है।" यहीं मेधा ने मूल्य बनने की प्रक्रिया और कोलबर्ग के नैतिक विकास के छह चरणों को अपने ही जीवन में पहचाना, और समझा कि परिवार, समाज, विद्यालय और आज का मीडिया मिलकर मनुष्य के मूल्य गढ़ते हैं। (खंड 12 और 13)

सातवाँ पड़ाव — रात का अलाव: रात को अलाव के पास बैठकर दादाजी ने आखिरी सीख दी — "बिटिया, कुर्सी के साथ लालच, अहंकार, चापलूसी और उदासीनता जैसे दुर्गुण भी चुपके से आते हैं। इन्हें पहचानना और इनके सामने संतोष, विनम्रता, साहस और करुणा खड़ी रखना। और याद रखना — सुकरात से लेकर गांधीजी तक, मानवता की हज़ारों साल की यात्रा ने यही सिखाया है कि मूल्य ही सभ्यता की असली पूँजी हैं।" (खंड 14 और 15)

अगली सुबह विदा होते समय मेधा ने अपनी डायरी के पहले पन्ने पर लिखा — "फ़ाइल पर हस्ताक्षर करने से पहले, अपने भीतर के हस्ताक्षर देख लेना।" दादाजी की उस एक दिन की चौपाल में पूरा नीतिशास्त्र छिपा था — और यही यात्रा अब आप इस अध्याय में करने जा रहे हैं।

 **इस कहानी से सीख:** यह अध्याय सात पड़ावों में चलता है — (1) नीतिशास्त्र का आधार, आयाम और निर्धारक, (2) क़ानून और परिणाम, (3) मूल्य और 33 प्रमुख मानवीय मूल्य, (4) सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता, (5) महान जीवनों से सीख, (6) मूल्य-निर्माण और कोलबर्ग के चरण, (7) दुर्गुण और ऐतिहासिक यात्रा।

दादाजी की चौपाल — कहानी के सात पड़ाव, अध्याय के सात भाग



चित्र 1.2: दादाजी की चौपाल — कहानी के सात पड़ाव, अध्याय के सात भाग

अध्याय विषय-सूची

1 नीतिशास्त्र (Ethics) — परिभाषा, उत्पत्ति एवं विशेषताएँ	9 सत्यनिष्ठा (Integrity) — अर्थ, महत्व एवं दार्शनिक आधार
2 नैतिकता (Morality) और नीतिशास्त्र (Ethics) — तुलना	10 निष्पक्षता (Impartiality) और गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)
3 नीतिशास्त्र के प्रकार (Types of Ethics)	11 महान दार्शनिकों, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन से शिक्षाएँ
4 प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ (Key Ethical Concepts)	12 मूल्य कैसे बनते हैं? — समाजीकरण और नैतिक विकास के चरण
5 कानून और नीतिशास्त्र में अंतर (Law vs Ethics)	13 मूल्य-निर्माण में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की भूमिका
6 नीतिशास्त्र के परिणाम (Consequences of Ethics)	14 दुर्गुण (Vices) — समाज में अस्वीकार्य प्रवृत्तियाँ
7 मानवीय मूल्य (Human Values) — परिभाषा एवं वर्गीकरण	15 नैतिकता और मानवीय मूल्य — ऐतिहासिक यात्रा (Timeline)
8 प्रमुख मानवीय मूल्य — विस्तृत विश्लेषण (असली कहानियों सहित)	

1. नीतिशास्त्र (Ethics) — परिभाषा, उत्पत्ति एवं विशेषताएँ

नीतिशास्त्र (Ethics) मानव जीवन की वह आधारशिला है जो व्यक्ति, समाज और प्रशासन को सही दिशा प्रदान करती है। प्रशासनिक सेवाओं में नैतिकता केवल कानून का पालन नहीं, बल्कि लोककल्याण की भावना से कर्तव्य निर्वहन का नाम है। मानवीय मूल्य वे मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो एक लोकसेवक को साधारण अधिकारी से आदर्श प्रशासक बनाते हैं।

नीतिशास्त्र एक बहुआयामी विषय है: इसे केवल किताबी नियम मत समझिए। यह अपनी उत्पत्ति (इतिहास), अपने प्रकार (परा, आदर्शमूलक, व्यावहारिक) और व्यावहारिक प्रशासनिक निर्णयों — इन तीनों आयामों में एक साथ काम करता है, जैसा नीचे इस पूरे खंड में समझाया गया है।

1.1 शब्द-उत्पत्ति (Etymology)

- ◆ नीतिशास्त्र (Ethics) शब्द यूनानी (Greek) भाषा के शब्द "एथॉस (Ethos)" तथा "एथिकॉस (Ethikos)" से व्युत्पन्न है — इनका संबंध चरित्र, आदत और रीति-रिवाज से है। जैसे किसी गाँव के लोग सदियों से एक ही तरीके से त्योहार मनाते आ रहे हों, वही उनका 'एथिकॉस' है — यानी समाज का बना-बनाया आचरण।
- ◆ इसका समानांतर शब्द नैतिकता (Morality) है, जो लैटिन शब्द "मोरेस (Mores)" से बना है — इसकी जड़ भी रीति-रिवाज ही है, पर आधुनिक प्रयोग में नीतिशास्त्र को अक्सर व्यावसायिक/संस्थागत आचार-संहिता से, और नैतिकता को व्यक्तिगत मान्यताओं से जोड़ा जाता है — यह भेद पूर्ण नहीं, बल्कि सामान्य प्रचलन है।
- ◆ आसान शब्दों में: नीतिशास्त्र (Ethics) को अक्सर सैद्धांतिक/संस्थागत (theory) पक्ष माना जाता है — यानी समाज या संगठन ने किताबों/आचार-संहिता में जो सही-गलत लिख रखा है, वह। नैतिकता (Morality) को अक्सर व्यावहारिक (practice) पक्ष माना जाता है — यानी व्यक्ति खुद अपने भीतर से क्या मानता है और कैसा व्यवहार करता है — पर व्यवहार में दोनों शब्द एक-दूसरे में घुले-मिले भी इस्तेमाल होते हैं।

1.2 नीतिशास्त्र की परिभाषाएँ (Multiple Definitions)

- ◆ नीतिशास्त्र एक आदर्शमूलक विज्ञान (Normative Science) है जो सामान्य मनुष्य के ऐच्छिक आचरण का नैतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करता है — सही-गलत, उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ का निर्धारण करता है।
- ◆ यह दर्शनशास्त्र की वह शाखा है जो चेतन प्राणी को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि उसे क्या करना चाहिए।

◆ **मैकेंज़ी (McKenzie)** (ब्रिटिश दार्शनिक जॉन एस. मैकेंज़ी, जिनकी पुस्तक 'ए मैनुअल ऑफ़ एथिक्स' नीतिशास्त्र की प्रसिद्ध आरंभिक पाठ्यपुस्तक है) के अनुसार — "नीतिशास्त्र मानव आदतों के पीछे के सिद्धांतों की जाँच करता है और उनकी अच्छाई या बुराई के कारणों का विश्लेषण करता है।"

◆ **शुक्रनीति** (शुक्राचार्य से जोड़ा जाने वाला प्राचीन भारतीय नीति-ग्रंथ, जिसमें राजा, प्रशासन और आचरण के नियम बताए गए हैं) के अनुसार — "नीतिशास्त्र समस्त शास्त्रों का सार है और सामाजिक व्यवस्था का प्रशासक है — यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — चारों पुरुषार्थों का प्रदाता है।"

आसान परिभाषा: नीतिशास्त्र (Ethics) — एक लाइन में समझें

■ **परिभाषा:** नीतिशास्त्र एक आदर्शमूलक विज्ञान है जो मनुष्य के आचरण का नैतिक दृष्टि से मूल्यांकन करता है — सही-गलत तय करता है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी खेल में रेफरी नियम बताता है कि कौन-सी चाल सही है और कौन-सी फ़ाउल — ठीक वैसे ही नीतिशास्त्र जीवन के 'खेल' में बताता है कि कौन-सा आचरण सही है और कौन-सा गलत। 🏠 **उदाहरण:** परीक्षा में नकल करना गलत है — यह कोई कानून की किताब नहीं, बल्कि नीतिशास्त्र (हमारी अंतरात्मा) सिखाती है।

नीतिशास्त्र — उत्पत्ति, परिभाषा एवं प्रकृति



चित्र 1.3: नीतिशास्त्र — उत्पत्ति, परिभाषा एवं प्रकृति

1.3 नीतिशास्त्र का क्षेत्र — "मानवीय कर्म" बनाम "मनुष्य के कर्म"

नीतिशास्त्र का क्षेत्र (Scope) यानी वह दायरा जिसके अंदर यह विषय काम करता है। नीतिशास्त्र मनुष्य के हर काम को नहीं परखता, बल्कि केवल उन कामों को परखता है जो सोच-समझकर किए जाते हैं। इसीलिए विद्वान दो शब्दों में अंतर करते हैं — "मानवीय कर्म" (Human Action) और "मनुष्य के कर्म" (Action of Human)।

◆ **मानवीय कर्म (Human Action):** वह काम जिसमें तीन बातें एक साथ हों — ज्ञान (व्यक्ति जानता है कि वह क्या कर रहा है), स्वतंत्र इच्छा (उसके पास करने या न करने का विकल्प है) और स्वैच्छिकता (वह अपनी मर्जी से कर रहा है)। जैसे — पढ़ना, रिश्तत लेना, किसी की मदद करना, धूम्रपान करना। ऐसे कामों पर ही "सही" या "गलत" का निर्णय दिया जाता है।

◆ **मनुष्य के कर्म (Action of Human):** वे काम जो शरीर अपने-आप करता है और जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता — जैसे छींकना, जमहाई लेना, नींद में करवट बदलना। इन्हें नैतिक या अनैतिक नहीं कहा जा सकता, इसलिए ये नीतिशास्त्र के क्षेत्र से बाहर हैं।

◆ **चरित्र और आचरण का संबंध:** बार-बार किए गए मानवीय कर्म आदत बनते हैं, आदतें मिलकर चरित्र (Character) बनाती हैं, और चरित्र फिर हमारे आचरण (Conduct) में दिखाई देता है। इसीलिए नीतिशास्त्र को कभी-कभी "चरित्र का विज्ञान" भी कहा जाता है।

◆ **सर्वोच्च शुभ (Summum Bonum):** नीतिशास्त्र का सबसे बड़ा प्रश्न है — जीवन का सबसे ऊँचा लक्ष्य या "सबसे बड़ा अच्छा" क्या है? किसी के लिए यह सुख है, किसी के लिए कर्तव्य, तो भारतीय परंपरा में यह मोक्ष या लोक-कल्याण है।

आसान परिभाषा: मानवीय कर्म (Human Action)

■ **परिभाषा:** वह सचेत कार्य जो ज्ञान, स्वतंत्र इच्छा और स्वैच्छिकता — तीनों के साथ किया गया हो; केवल ऐसे कार्य ही नैतिक मूल्यांकन के दायरे में आते हैं।

💡 **आसान भाषा में:** जो काम आपने जान-बूझकर, अपनी मर्जी से और विकल्प होते हुए चुना — उसी के लिए आपकी तारीफ़ या आलोचना होगी। 🏠 **उदाहरण:** भीड़ में धक्का लगने से किसी का गिलास गिर जाए तो यह "मनुष्य का कर्म" है; पर जान-बूझकर गिलास फेंकना "मानवीय कर्म" है।

नीतिशास्त्र अकेला नहीं चलता — यह कई दूसरे विषयों के प्रश्नों से भी जुड़ा है। नीचे की तालिका इसे सरल रूप में दिखाती है:

प्रश्नों का प्रकार	नीतिशास्त्र किन बातों की जाँच करता है	सरल उदाहरण
मनोवैज्ञानिक	ऐच्छिक कार्य क्या है, उद्देश्य (Motive) कैसे बनते हैं, इच्छा और सुख का संबंध	भूख के कारण चोरी — मजबूरी थी या लालच?
दार्शनिक	मानव व्यक्तित्व का स्वभाव, सर्वोच्च शुभ क्या है	खुशी बड़ी है या कर्तव्य?

प्रश्नों का प्रकार	नीतिशास्त्र किन बातों की जाँच करता है	सरल उदाहरण
धार्मिक	संकल्प की स्वतंत्रता, आत्मा, कर्म-फल	क्या हर कर्म का फल मिलता है?
सामाजिक	व्यक्ति और राज्य का संबंध, निजी हित बनाम सामाजिक हित	अपने खेत के लिए नहर का पानी रोकना
क़ानूनी	कोई क़ानून नैतिक है या नहीं, दंड का नैतिक आधार	मृत्युदंड उचित है या नहीं?

1.4 नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम

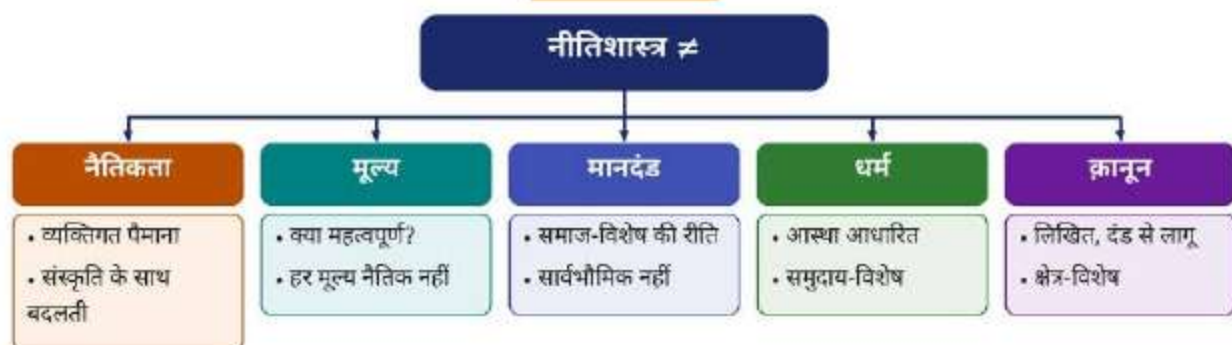
बहुत से विद्यार्थी नीतिशास्त्र को नैतिकता, मूल्य, सामाजिक रीति, धर्म या क़ानून — इनमें से किसी एक के बराबर मान लेते हैं। ये सब आपस में जुड़े ज़रूर हैं, पर एक-दूसरे के समान नहीं हैं। अंतर समझने से पूरे विषय की समझ साफ़ होती है।

नीतिशास्त्र ≠	अंतर का कारण	उदाहरण
नैतिकता (Morality)	नैतिकता व्यक्ति, परिवार या समुदाय का अपना पैमाना है, जबकि नीतिशास्त्र अपेक्षाकृत सार्वभौमिक मानकों की व्यवस्थित खोज है।	किसी समुदाय में बहुविवाह स्वीकार्य हो सकता है, पर समानता के नैतिक सिद्धांत पर यह खरा नहीं उतरता।
मूल्य (Values)	मूल्य बताते हैं कि क्या "महत्वपूर्ण" है; नीतिशास्त्र बताता है कि क्या "सही" है। हर मूल्य नैतिक नहीं होता।	जाति-नियमों का पालन किसी के लिए "मूल्य" हो सकता है, पर वह नैतिक नहीं है।
सामाजिक मानदंड (Social Norms)	मानदंड किसी विशेष समाज की रीतियों से बनते हैं, सार्वभौमिक नहीं होते।	बड़ों का सम्मान नैतिक भी है, पर दहेज एक रीति होकर भी अनैतिक है।
धर्म (Religion)	धर्म आस्था पर टिका है और किसी समुदाय-विशेष से जुड़ा है; नीतिशास्त्र तर्क पर आधारित है।	फिर भी करुणा, अहिंसा, सत्य जैसे कई नैतिक सिद्धांत धर्मों से ही आए हैं।
क़ानून (Law)	क़ानून किसी देश/क्षेत्र तक सीमित, लिखित और दंड से लागू होता है; नीतिशास्त्र अलिखित और अंतरात्मा से संचालित।	नमक क़ानून क़ानूनी था, पर गांधीजी ने उसे अनैतिक मानकर तोड़ा।

धर्म और नीतिशास्त्र अलग होते हुए भी गहराई से जुड़े हैं, क्योंकि मानव इतिहास में धर्म पहले आया और उसी से अनेक नैतिक सिद्धांत निकले। प्रमुख धर्मों के मूल नैतिक मूल्य इस प्रकार हैं:

धर्म	प्रमुख नैतिक मूल्य
हिंदू धर्म	धर्म (कर्तव्य), कर्म का नियम, निष्काम कर्म, अहिंसा, वसुधैव कुटुम्बकम्, सत्यमेव जयते
जैन धर्म	पंच महाव्रत — सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (संग्रह न करना), ब्रह्मचर्य; त्रिरत्न — सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चरित्र
बौद्ध धर्म	शील (सदाचार), समाधि, प्रज्ञा; मैत्री (प्रेम-भाव), करुणा, मुदिता (दूसरों की खुशी में खुशी), उपेक्षा (समभाव); मध्यम मार्ग, "अप्प दीपो भव" (अपना दीपक स्वयं बनो)
इस्लाम	अदल (न्याय), रहमत (करुणा), ज़कात (दान), समानता, भाईचारा, अख़लाक़ (अच्छा चरित्र)
ईसाई धर्म	प्रेम, करुणा, क्षमा, विनम्रता; "स्वर्णिम नियम" — दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम अपने साथ चाहते हो
सिख धर्म	सेवा, लंगर (साझा भोजन), "किरत करो, नाम जपो, वंड छको" — ईमानदारी से कमाओ, ईश्वर को याद करो, बाँटकर खाओ

नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम



चित्र 1.4: नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम

1.5 नैतिक उत्तरदायित्व कब सीमित माना जाता है? (Limited Moral Responsibility)

निम्नलिखित स्थितियों में व्यक्ति के नैतिक उत्तरदायित्व को सीमित माना जाता है, क्योंकि इनमें सही-गलत तय करने की स्वतंत्र क्षमता, ज्ञान या विकल्प पर्याप्त रूप से मौजूद नहीं होते:

1. जिस व्यक्ति में नैतिक ज्ञान, तर्कबुद्धि और स्वतंत्र निर्णय की पर्याप्त क्षमता विकसित ही न हुई हो — जैसे घने जंगल में बिल्कुल अकेले पले-बढ़े किसी व्यक्ति को हम पूरी तरह 'अनैतिक' नहीं कह सकते, क्योंकि उसे कभी समाज में सही-गलत सिखाया ही नहीं गया।
2. गंभीर मानसिक अस्वस्थता की स्थिति — भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 22 के अनुसार, यदि व्यक्ति मानसिक अस्वस्थता के कारण कृत्य की प्रकृति या उसके गलत/विधि-विरुद्ध होने को समझने में ही असमर्थ था, तो उसे आपराधिक दायित्व से छूट मिल सकती है — यह पूर्ण छूट नहीं, बल्कि एक शर्त-आधारित प्रावधान है।
3. बहुत छोटे बच्चे — कानून में 7 वर्ष से कम आयु के बच्चे को आपराधिक दायित्व से मुक्त रखा गया है, क्योंकि जैसे एक 4 साल का बच्चा किसी का खिलौना छीन ले तो हम उसे 'चोर' नहीं कहते — उसमें मालिकाना हक की समझ ही विकसित नहीं हुई (यह मुख्यतः आपराधिक दायित्व की अवधारणा है, नीतिशास्त्र का सामान्य नियम नहीं)।
4. पशु-पक्षी — इनके पास नैतिक विवेक की मानवीय क्षमता नहीं मानी जाती।
5. अनेच्छिक कार्य (Involuntary Actions) — जैसे नींद में चलते हुए किसी चीज़ का टूट जाना।
6. गंभीर बाह्य दबाव में करवाया गया कार्य — जैसे किसी व्यक्ति को बंदूक की नोक पर धमकाकर कोई अपराध करने पर मजबूर किया जाए, तो उस व्यक्ति की नैतिक/कानूनी जवाबदेही सीमित हो सकती है (दोष मुख्यतः धमकाने वाले का माना जाता है)।

🔑 **इन्हें सीमित उत्तरदायित्व क्यों माना जाता है:** इसका मुख्य आधार 'नैतिक अभिकर्ता' (Moral Agent) की अवधारणा है — यानी सही-गलत समझने की मानसिक क्षमता, ज्ञान और स्वतंत्र विकल्प का होना। जहाँ ये तीनों पर्याप्त रूप से मौजूद न हों, वहाँ नैतिक मूल्यांकन कठोरता से नहीं किया जा सकता — यह पूर्ण अपवाद नहीं, बल्कि मात्रा (Degree) का प्रश्न है।

1.6 नीतिशास्त्र की पूर्व-मान्यताएँ (Pre-conditions)

- ◆ **संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will):** नैतिक मूल्यांकन के लिए सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यक्ति के पास पर्याप्त स्वेच्छा, जानकारी और विकल्प होने चाहिए — इनकी कमी उत्तरदायित्व को कम कर सकती है। (ध्यान रहे — नियतिवाद और नैतिक उत्तरदायित्व को पूरी तरह विपरीत मानना ज़रूरी नहीं; 'सामंजस्यवाद (Compatibilism)' जैसे विचार दोनों को साथ स्वीकारने का भी प्रयास करते हैं — इनके अनुसार हमारे कार्य कारणों से प्रभावित होते हुए भी, यदि वे हमारी अपनी इच्छा और सोच से निकले हैं, तो हम उनके लिए जिम्मेदार हैं; यह एक दार्शनिक बहस का विषय है।)
- ◆ **ज्ञान एवं उद्देश्य:** कर्ता को अपने कार्य का ज्ञान और उद्देश्य होना चाहिए — जैसे किसी को यह पता ही न हो कि दवा ज़हरीली है और वह गलती से किसी को दे दे, तो यह जानबूझकर किया अपराध नहीं माना जाता।
- ◆ **विकल्पों की उपलब्धता:** जब विकल्प उपलब्ध हों तभी नैतिक चुनाव संभव है — जैसे किसी अधिकारी के पास घूस लेने या न लेने, दोनों विकल्प खुले हों, तभी उसका फैसला 'नैतिक' या 'अनैतिक' कहलाएगा।

1.7 नैतिकता की विशेषताएँ

- ◆ **सार्वभौमिकता:** कुछ मूल नैतिक नियमों पर व्यापक सामाजिक सहमति (Broad Consensus) पाई जाती है (जैसे निर्दोष की हत्या को लगभग सभी समाज गलत मानते हैं) — हालाँकि युद्ध, आत्मरक्षा या न्यायिक दंड जैसे संदर्भों में इस पर नैतिक विमर्श जटिल हो सकता है, यह पूर्ण रूप से निरपवाद नियम नहीं है।
- ◆ **सापेक्ष वस्तुनिष्ठता:** एक समाज में नैतिक नियमों की सामान्य सहमति होती है, पर अलग-अलग समाजों में भिन्नता संभव है। यानी एक समाज के भीतर लोग अधिकतर नैतिक बातों पर सहमत होते हैं, इसलिए वहाँ नियम 'वस्तुनिष्ठ' (सबके लिए एक जैसे) लगते हैं; पर दूसरे समाज से तुलना करें तो वही नियम बदल सकते हैं, इसलिए वे 'सापेक्ष' हैं — जैसे भोजन, पहनावे या विवाह से जुड़े नैतिक नियम।
- ◆ **गत्यात्मकता:** नैतिक मानक समय के साथ बदलते हैं (जैसे सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का उन्मूलन, LGBTQ+ अधिकारों की मान्यता)।
- ◆ **अर्जित:** नैतिक व्यवहार का बड़ा भाग परिवार, समाज और शिक्षा से सीखा-विकसित होता है; हालाँकि सहानुभूति जैसी कुछ प्रवृत्तियों का एक आंशिक जैविक आधार भी माना जाता है।
- ◆ **आंतरिक प्रेरणा:** सच्चा नैतिक आचरण बाहरी दबाव या सज़ा के डर से नहीं, बल्कि अंतरात्मा की आवाज़ से चलता है। जैसे कोई व्यक्ति इसलिए चोरी न करे कि पुलिस पकड़ लेगी, तो यह केवल क़ानून का डर है; पर अगर वह इसलिए चोरी न करे कि उसका मन इसे गलत मानता है, तो यह नैतिकता है।

1.8 नीतिशास्त्र का सार (Essence of Ethics)

किसी चीज़ का "सार" (Essence) उसका वह मूल गुण है जो उसकी पहचान तय करता है। नीतिशास्त्र के सार को नीचे के आठ लक्षणों से समझा जा सकता है:

- ◆ **अच्छे-बुरे का निर्धारण:** नीतिशास्त्र हमारे विचार, आचरण और व्यवहार की अच्छाई-बुराई तय करने में मदद करता है।
- ◆ **समाज में ही बनता है:** कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था लेकर पैदा नहीं होता। परिवार, समाज और संस्कृति के साथ रहकर ही वह सही-गलत सीखता है।